विद्या भारती संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

मार्च 2023 | फाल्गुन-चैत्र, विक्रमी सं. 2079

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में पारित प्रस्ताव – ‘स्व’ आधारित राष्ट्र के नवोत्थान का संकल्प लें

पत्रिका सम्पादक अखिल भारतीय कार्यशाला

शिक्षा में विमर्श स्थापित करने के लिए निरंतर और सामूहिक प्रयास जरूरी: श्री आलोक कुमार

अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यशाला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में अग्रणी योद्धा हमारा आचार्य हो: श्री डी. रामकृष्ण राव

श्री गुरु नानक देव के त्रि-सूत्री सिद्धांत

भारतीय पंरपरा के अनुसार, जब दुनिया में अन्याय, उत्पीड़न, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थिति अधोगति में जाने लगे तो उस समय दुनिया में कोई अवतार या गुरु आगमन होता है जो दुनिया को पतन से उठाकर, सच्चे गुणों को अपना कर ईश्वर के साथ विलय होने का रास्ता दिखता है। ऐसे अवतारी पुरूष, गुरु जन-मानस को प्रेम करुणा का अमृत देते हैं और सही रास्ता दिखाते हैं।

गुरु नानक देव का वन मानवता के लिए सच्चाई की प्राप्ति के लिए रास्ता दिखाने का काम करता रहा और भविष्य में भी करता रहेगा। उन्होंने अपना अधिकांश वन देश-देशांतरों की यात्रा में (जिन्हे '**उदासियो**' का नाम दिया गया है) गुजारा। लोगों को धर्म का वास्तविक स्वरुप समझा कर परमात्मा में लीन होने का रास्ता दिखया।

"गुरु साहिब ने लोगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक वन में आई गिरावट को खत्म करके वन का असली उद्देश्य समझाते हुए उन्हें उच्च आदर्शों का मॉडल 'किरत करने, नाम जपने और बाँट छकने' का तीन सूत्री सिद्धांत दिया। जिसमें आदर्श वन का संपूर्ण दर्शन है। इन सिद्धांतों को अपनाने वाला व्यक्ति समाज में रहते हुए, कार-विचार करते हुए, परिवार की पालना करते हुए स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और वन के वास्तविक उद्देश्य को पाकर ईश्वर के साथ विलय होता है।

गुरुबाणी के अनुसार :

"उदम् करेदिआ उ तूँ कमावदिया सुख भुंचु।।
धिआइदिआ तूं प्रभु मिलु नानक उतरी चिंत।।"

शरीर के निर्वाह के लिए स्वस्थ आहार की प्राप्ति और तंदुरुस्ती के लिए श्रम करना बहुत जरुरी है। श्रम परिवार की जरुरतों के लिए भी। इसके अलावा, समाज में जरुरतमंदों की मदद के लिए भी श्रम करना आवश्यक है। एक श्रम करने वाला व्यक्ति समाज पर बोझ नहीं बनता बल्कि अन्य लोगों की आय के लिए भी संसाधन बनाता है। उसका सामाजिक और आर्थिक वन उत्पन्न हो जाता है। कीर्ति मनुष्य स्वाभिमान की जिंदगी ता है और किसी पर निर्भर नहीं होता । कीर्तिमान मनुष्य आलसी नहीं होता है। कीर्ति मनुष्य स्वस्थ रहता है। गुरबाणी का पवित्र गुरुवाक् है:

"घालि खाड़ किछु हथहु देइ।।
नानक राहु पछाणहि सेई।।"

श्रम से संबंधित गुरु साहिब के वन की एक साखी प्रचलित है कि एमनाबाद के एक साहूकार मलिक भागों ने अपने घर में ब्रह्म भोज रखा था जिसमें सभी साधु-संतों को बुलाया गया। उन्होंने गुरु साहिब को निमंत्रण भेजा लेकिन गुरु ने इस भोज में आने से इनकार कर दिया। गुरु को बार-बार अनुरोध करने पर आप उन्हें उपदेश देने के लिए गुरु उनके घर गए लेकिन भोजन नहीं लिया।

मलिक भागों के पूछने पर गुरु ने कहा कि तुम्हारी कमाई सच्चे श्रम की ना होकर और गरीबों के उत्पीड़न से इकठ्ठा की गई है, इसलिए इसमें गरीबों का खून है, इसलिए हम यह खाना नहीं खा सकते।

मलिक भागों ने इसका प्रमाण माँगा। गुरु ने मलिक भागों से तैयार भोजन मँगवाया और भाई लालों के घर में बनाई गई कोधरे की रोटी मँगवाई। गुरु ने अपने दाहिने हाथ में भाई लालों की रोटी और अपने बाएँ हाथ में मलिक भागों की रोटी ली। जब गुरु ने दोनों रोटियों को हाथ में दबाया तो मलिक भागों की रोटी से खून निकला और भाई लालों की रोटी से दूध की धारा बह निकली। मलिक भागों ने गुरु से माफी माँगी और आगे से अपने हाथों से काम करने का संकल्प लिया।

नाम जपना: दुनिया में सबसे उत्तम है नाम जपना। गुरुबाणी का हुकुम है-

"अवरि काज तैरे कितै न काम।
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम।।" अंग साहिब-12

ईश्वर के नाम से मनुष्य में दैवीय गुण पैदा हो जाते हैं, जिससे मानव देवता बन जाता है, समदृष्टि आ जाती है इससे साझीवालता (भाईचारा) की भावना पैदा होती है, उसकी स्थिति गुरबाणी अनुसार ऐसी बन जाती है:

"सभे साझीवाल सदइनित किसै न दिसहि बाहरा ऊ।" अंग साहिब – 97

इंसान हर किसी की भलाई चाहता है। वह प्राणियों की भलाई और परोपकार के लिए हमेशा तैयार रहता है और किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। किताबी ज्ञान हमें Knowledge दे सकता है लेकिन नाम Wisdom पैदा करता है। उसको अच्छे और बुरे की समझ हो जाती है। वह संसार को संवारने में वन लगा देता है। सम्पूर्ण प्रकृति की संभाल करता है। गुरबाणी का आदेश है:

'सरब रोग अउखदु नाम।।' अंग साहिब-274

नाम सभी रोगों की दवाई है। इस पर बहुत शोध किया गया है

आगे जारी...

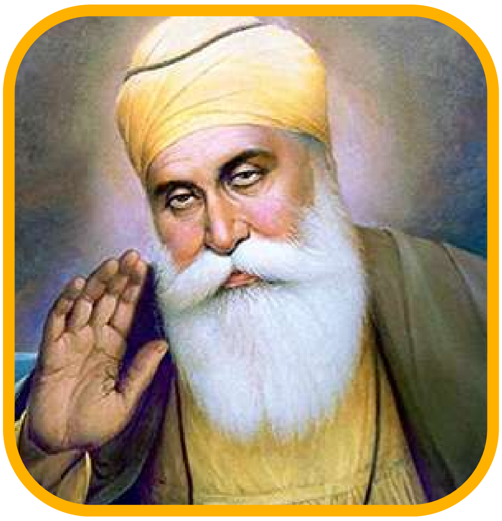

जिससे यह साबित हो गया है कि नाम जपने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की बीमारियों से छुटकारा पा सकता है और शारीरिक व मानसिक तौर पर तंदरूस्त हो जाता है।

जिस प्रकार शरीर के लिए आहार आवश्यक है, उसी प्रकार आत्मा का आहार प्रभु का नाम है। जब कोई व्यक्ति नाम जपता है, तो उसके भीतर आध्यात्मिक बल बढ़ता है फिर वह शारीरिक बल से सही दिशा में काम ले सकता है। तनजानिया विश्वविद्यालय द्वारा शोध किया गया कि रात के 12 बजे से सुबह 7 बजे तक परमात्मा की बंदगी करने से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (Cosmic energy) मिलती है। इस समय में 4 बजे से 5 बजे तक का समय Prime Time होता है। प्रभु के नाम का जाप करने से इंसान में भगवान के सद्गुण आ जाते हैं। इस तरह से इंसान गुणवान बनता है। नाम मनुष्य के मन को जागृत करता है। गुरुबाणी का आदेश है:

इहु मन सक्ति इहु मनु सीऊ।
इहु मनु पंच ततु को ऊ।। अंग साहिब 340

बाँट कर छकना: कीर्ति मनुष्य में बाँट कर छकना(खाने) की प्रकृति उत्पन्न होती है। वह समाज के बुरे लोगों को पुनः सँवारने के लिए समय व्यतीत करता है। सिक्ख पंथ में सिक्ख की कमाई का दसवाँ हिस्सा, गुरु के नाम पर अलग करता है, जिसे ‘दशबन्ध’ कहा जाता है। इस कमाई का उपयोग जरुरतमंद, गरीब, बेसहारा, अनाथ लोगों के कल्याण के लिए किया जाता है, जैसे गरीब बच्चों को पढ़ाना आदि।

जॉन रॉक फिलर’ नामक एक दानी कहता है कि उसके द्वारा किए गए दान से उसका धन बढ़ जाता है। वह तथ्य अर्थशास्त्र के सिद्धांत के विपरीत है, लेकिन जब वह अन्य लोगों पर सिद्धान्त का शोध करता है, तो तथ्य सामने आते हैं कि यह सिद्धांत Universal low है। इस प्रकार दान का सिद्धांत है कि आप जितना बाँटोगे उससे अधिक प्राप्त करोगे। गुरु नानक देव ने पहले ही हमें यह सिद्धान्त दे दिया है।

‘जॉन रॉक फिलर’ नामक एक दानी कहता है कि उसके द्वारा किए गए दान से उसका धन बढ़ जाता है। वह तथ्य अर्थशास्त्र के सिद्धांत के विपरीत है, लेकिन जब वह अन्य लोगों पर सिद्धान्त का शोध करता है, तो तथ्य सामने आते हैं कि यह सिद्धांत Universal low है। इस प्रकार दान का सिद्धांत है कि आप जितना बाँटोगे उससे अधिक प्राप्त करोगे। गुरु नानक देव ने पहले ही हमें यह सिद्धान्त दे दिया है।

गुरबाणी के अनुसार:

‘खावहि खरचहि रल मिल भाई।।
तोटि न आवै बधदो जाई।।’

दुनिया में जहाँ भी कोई प्राकृतिक आपदा या युद्ध होता है या दुनिया के किसी भी क्षेत्र में भुखमरी और महामारी फैलने के कारण कोई आफत आ जाती है तो ‘खालसा एंड सोसाइटी’ वहां लंगर का आयोजन करती है और उस जगह के लोगों के पुनर्वास के लिए प्रंबध करती है, फिर भी धन आदि की किसी तरह की कोई कमी नहीं आती है।

उपरोक्त किरत करने, नाम जपने और बाँट कर छकने का सिद्धांत समाज को नई दृष्टि, आपसी भाईचारा, प्रेम और सुरक्षा, पृथ्वी- जल-वायु के साथ निकटता, व-जन्तुओं के साथ प्यार और कादर की प्रकृति की संभाल करता है। प्रकृति की गोद का आनंद लेते हुए, कादर में विलय हो जाता है, जो मानव दुनिया में आने का मुख्य उद्देश्य है।

श्री गुरु नानक देव के त्रि-सूत्री सिद्धांत **‘किरत करने, नाम जपने और बाँट कर छकने’** को आज की शिक्षा में सम्मिलित कर नई पीढ़ी को अवगत करवाने की आज महती आवश्यकता है।

-डॉ नरेंद्र सिंह विर्क

योग शिक्षा की अखिल भारतीय कार्यशाला

अमरकंटक । अखिल भारतीय योग केंद्र अमरकंटक में योग शिक्षा की अखिल भारतीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी, कुलपति इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय अमरकंटक, श्री स्थानू मूर्ति प्रभारी अखिल भारतीय योग शिक्षा, श्री राजेश संयोजक अखिल भारतीय योग शिक्षा, श्री लवलीन बाबा धारकुंडी आश्रम अमरकंटक की सादर उपस्थिति।

15 मार्च से 19 मार्च 2023 तक चली योग कार्यशाला में 8 क्षेत्रीय योग शिक्षा प्रमुख, 19 प्रांत योग शिक्षा प्रमुख सहित देश भर के कुल 40 चयनित दक्ष प्रशिक्षक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

पत्रिका सम्पादक अखिल भारतीय कार्यशाला

शिक्षा में विमर्श स्थापित करने के लिए निरंतर और सामूहिक प्रयास जरूरीः आलोक

पत्र-पत्रिकाओं के साथ तकनीक का भी सहयोग लें
देश के प्रति गौरव और विश्व कल्याण का भाव जगे

नोएडा। सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर-12, नोएडा में 18-19 मार्च 2023 को विद्या भारती प्रचार विभाग की दो दिवसीय पत्रिका सम्पादक अखिल भारतीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्री आलोक कुमार ने कहा कि शिक्षा में विमर्श स्थापित करने के लिए निरंतर और सामूहिक प्रयास जरूरी है। इसके लिए पत्र-पत्रिकाएं तो प्रमुख हैं ही साथ ही तकनीक का सहयोग भी लेना होगा। वर्तमान युग में सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया अपना विमर्श स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। हमारा विमर्श सबके हित में हमारा हित है, सबके कल्याण में हमारा कल्याण है और सभी समान हैं, इस भाव को आगे बढ़ाता है। हमें आम लोगों के बीच यही विमर्श स्थापित करना है। उन्होंने पत्रिका सम्पादकों का आह्वान किया कि ध्यान रखें जो सामग्री प्रस्तुत की जा रही है उससे पाठकों के मन में देश के प्रति गौरव और विश्व के कल्याण की भावना का विकास हो। आज देश में सोशल मीडिया के माध्यम से एक ऐसे विमर्श की स्थापना का प्रयास किया जा रहा है जिसमें भारत की संस्कृति, परंपराओं, अर्थव्यवस्था को कमतर साबित करने का प्रयास हो रहा है। आज देश में नए विवाद पैदा किए जा रहे हैं, जिससे भारत की छवि दुनिया में खराब हो सके।

श्री आलोक कुमार ने कहा कि समाज का एक वर्ग आज भारत की आत्मनिर्भरता, औद्योगिक विकास और सांस्कृतिक गौरव को सहन नहीं कर पा रहा है, इसलिए देश की संस्कृति और परंपराओं पर सवाल उठाए जा रहे हैं। इन सबका मुकाबला सही तथ्यों के साथ तकनीक का प्रयोग करते हुए रुचिकर सामग्री के माध्यम से किया जा सकता है। श्री आलोक ने कहा कि सम्पादक पत्रिका की गुणवत्ता बढ़ाएं और सकारात्मक सामग्री के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों के बीच पहुंचने का प्रयास करें। सम्पादकों को चाहिए कि समाज में और विशेष रूप से शिक्षा जगत में शिक्षा के पंचप्राण स्थापित करें। अंग्रेजों ने बहुत चतुरता से अपनी संस्कृति और भाषा को श्रेष्ठ साबित करने के लिए भारत की शिक्षा प्रणाली की अवहेलना की और भारतीय भाषाओं को कमतर बताया। हम सभी को मिलकर इस विमर्श को बदलना है और भारतीय शिक्षा के दर्शन को पुनः स्थापित करना है।

पत्रिका की सामग्री सरल और पठनीय बनाएं

हिंदुस्तान समाचार एजेंसी के संपादक श्री जितेंद्र तिवारी ने पत्रिका संपादकों से कहा कि संपादकीय कौशल के माध्यम से सामग्री को सरल और पठनीय बनाएं। अपने विषय को सही ढंग से समझाएं, तथ्यों को ठीक प्रकार से रखें, व्याकरण की अशुद्धियां दूर करें, एक वाक्य में शब्दों की पुनरावृति न करें, छोटे वाक्य बनाएं और किसी तथ्य पर संदेह हो तो उसे हटा दें। लेख का इंट्रो और शीर्षक ऐसा हो जिससे पाठक पढ़ने को विवश हो जाए। उन्होंने संपादन के सिद्धांतों का पालन करने की अपील करते हुए कहा कि सामग्री में तथ्यात्मकता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता और संतुलन होना चाहिए। लेख के विषय प्रासंगिक हों, क्योंकि पत्रिका का स्वरूप गंभीर और स्थाई होता है।

पत्रिकाओं की डिजिटल प्रेजेंस और कंटेंट आडिट आवश्यक

विद्या भारती दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री व प्रचार विभाग की केंद्रीय टोली के सदस्य श्री रवि कुमार ने पत्रिका की डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपस्थिति और कंटेंट ऑडिट के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विशेष रूप से पत्रिकाओं के पी.डी.एफ. फॉर्मेट, ई-पेपर सॉल्यूशन, फ्लिप वर्जन प्लगिन, वेबसाइट पर पी.डी.एफ., ब्लॉग की चर्चा की। इसके साथ ही कंटेंट ऑडिट की आवश्यकता, कंटेंट ऑडिट में ध्यान रखने योग्य बातों और कंटेंट ऑडिट के तरीकों की जानकारी दी। कार्यशाला के समापन पर विभिन्न राज्यों से प्रकाशित विद्या भारती की पत्रिकाओं के सम्पादकों, क्षेत्र प्रचार प्रमुखों, प्रान्त प्रचार प्रमुखों तथा अन्य सभी गणमान्य बन्धुओं का प्रधानाचार्य प्रकाशवीर ने आभार व्यक्त किया। इस कार्यशाला में देशभर के 11 में से 10 क्षेत्रों से 49 प्रतिभागी उपस्थित रहे ।

इस अवसर पर विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री श्री अवनीश भटनागर ने कहा पत्रिका सम्पादकों के लिए सम्पादन का अवसर और प्रबंधन पक्ष की जानकारी के साथ तकनीकी बातों को जानना और समझना आवश्यक है। **आगे जारी...**

पत्रिका का कोई भी अंक प्रकाशित करने से पूर्व यह ध्यान रखना चाहिए कि पत्रिका का उद्देश्य क्या है और किस रूप में विमर्श को पाठकों के समक्ष ले जाना है। शिक्षा में भारतीयता का विचार शामिल हो इसके लिए पत्रिका में प्रकाशित किये जाने वाले आलेख की समीक्षा करें। किसी शैक्षिक पत्रिका का प्रकाशन अकैडमिक भी है और समाज से जुड़ा हुआ कार्य भी है। श्री भटनागर ने कहा कि सम्पादकों को चाहिए कि वह पत्रिका की गुणवत्ता के लिए विषय वस्तु चयन, वाक्य रचना, शब्दों के चयन और प्रूफ की अशुद्धियों को दूर करें। पत्रिका सम्पादकों को अपने लक्षित पाठक समूह की पहचान कर उनकी रूचियों के अनुसार सामग्री का चयन करना चाहिए। पत्रिका में नवीनता और वन्तता बनाये रखने के लिए प्रत्येक अंक में नये प्रयोग, नये डिजाइन और नवीन प्रस्तुतिकरण और जैसे बदलाव करते रहने चाहिए।

कार्यशाला को विद्या भारती प्रचार विभाग के प्रभारी श्री सुधाकर रेड्डी, विद्या भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री डोमेश्वर साहू, विद्या भारती प्रचार विभाग की केन्द्रीय टोली के सदस्य श्री विजय मारु ने संबोधित किया।

कार्यशाला के दौरान पांचजन्य पत्रिका कार्यालय व प्रेरणा पत्रकारिता संस्थान नोएडा का भ्रमण प्रतिभागियों द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यशाला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में अग्रणी योद्धा हमारा आचार्य हो: श्री डी. रामकृष्ण राव

गाजियाबाद। देश की शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने व आत्मनिर्भर एवं सशक्त भारत के लिए भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके, इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 विद्या भारती के सभी विद्यालयों में लागू हो गई है। ऐसे में शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हो और इसके लिए अच्छे शिक्षक तैयार हो सकें, इस पर कार्य किया जा रहा है। इसके लिए देश के विभिन्न प्रांतों में प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण विद्या भारती द्वारा कराया जा रहा है। इसी कड़ी में तीन दिवसीय (28 फरवरी से 2 मार्च) अखिल भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन सरस्वती शिशु मंदिर और दुर्गावती हेमराज टाह सरस्वती विद्या मंदिर, नेहरू नगर गाजियाबाद में संयुक्त रूप से किया गया।

कार्यशाला का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अनुसार शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण देना था। इस अवसर पर विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोविन्द महन्त ने कहा कि एक निश्चित लक्ष्य के लिए हम सभी कृत संकल्पित हैं। हम विद्या भारती के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ देश और सर्वमान्य देश बनाने का कार्य कर रहे हैं।

विद्या भारती के अध्यक्ष श्री डी. रामकृष्ण राव ने कहा कि संभ्रम की स्थिति से स्पष्टता की ओर हम आ गये हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन में अग्रणी योद्धा हमारा आचार्य हो। श्री अवनीश भटनागर-अखिल भारतीय महामंत्री, श्री श्रीराम आरावकर-अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, एनसीईआरटी की प्रोफेसर एंड हेड सीआईईटी - रंजना अरोड़ा, श्री भरत भाई धोंकई - निदेशक समुद्र विकास प्रकल्प गुजरात, प्रोफेसर सुखविन्दर - एनसीईआरटी, श्रीमती नम्रता दत्त - सह संयोजिका शिशा वाटिका, श्री ए. लक्ष्मणराव - प्रभारी प्रशिक्षण विभाग आदि ने भी विचार रखे।

प्रशिक्षण कार्यशाला में अखिल भारतीय टोली के सदस्य, क्षेत्रों के संयोजक, सहसंयोजक और प्रान्तों के संयोजक व सह संयोजक उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में पारित प्रस्ताव – 'स्व' आधारित राष्ट्र के नवोत्थान का संकल्प लें

पानीपत। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित अभिमत है कि विश्व कल्याण के उदात्त लक्ष्य को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु भारत के **'स्व'** की सुदीर्घ यात्रा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सेवा साधना एवं ग्राम विकास केंद्र, पट्टीकल्याणा पानीपत, हरियाणा में चैत्र कृष्ण 5-7 युगाब्द 5124 (12-14 मार्च 2023) को संपन्न हुई। प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव में कहा गया कि विदेशी आक्रमणों तथा संघर्ष के काल में भारतीय जनवन अस्त-व्यस्त हुआ तथा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक व्यवस्थाओं को गहरी चोट पहुंची। इस कालखंड में पूज्य संतों व महापुरुषों के नेतृत्व में संपूर्ण समाज ने सतत् संघर्षरत रहते हुए अपने **'स्व'** को बचाए रखा। इस संग्राम की प्रेरणा स्वधर्म, स्वदेशी और स्वराज की 'स्व' त्रयी में निहित थी, जिसमें समस्त समाज की सहभागिता रही। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर सम्पूर्ण राष्ट्र ने इस संघर्ष में योगदान देने वाले जननायकों, स्वतंत्रता सेनानियों तथा मनीषियों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया है। स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत हमने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभर रही है। भारत के सनातन मूल्यों के आधार पर होने वाले नवोत्थान को विश्व स्वीकार कर रहा है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की अवधारणा के आधार पर विश्व शांति, विश्व बंधुत्व और मानव कल्याण के लिए भारत अपनी भूमिका निभाने के लिए अग्रसर है।

बंधुता पर आधारित समरस समाज का निर्माण

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का मत है कि सुसंगठित, विजयशाली व समृद्ध राष्ट्र बनाने की प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, सर्वांगीण विकास के अवसर, तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग एवं पर्यावरणपूरक विकास सहित आधुनिकीकरण की भारतीय संकल्पना के आधार पर नए प्रतिमान खड़े करने जैसी चुनौतियों से पार पाना होगा। राष्ट्र के नवोत्थान के लिए हमें परिवार संस्था का दृढ़ीकरण, बंधुता पर आधारित समरस समाज का निर्माण तथा स्वदेशी भाव के साथ उद्यमिता का विकास आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

इस दृष्टि से समाज के सभी घटकों, विशेषकर युवा वर्ग को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी। संघर्षकाल में विदेशी शासन से मुक्ति हेतु जिस प्रकार त्याग और बलिदान की आवश्यकता थी, उसी प्रकार वर्तमान समय में उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नागरिक कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध तथा औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त समाजवन भी खड़ा करना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वाधीनता दिवस पर दिये गए **'पंच-प्रण'** का आह्वान भी महत्वपूर्ण है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस बात को रेखांकित करना चाहती है कि जहाँ अनेक देश भारत की ओर सम्मान और सद्भाव रखते हैं, वहीं भारत के 'स्व' आधारित इस पुनरुत्थान को विश्व की कुछ शक्तियाँ स्वीकार नहीं कर पा रही हैं। हिंदुत्व के विचार का विरोध करने वाली देश के भीतर और बाहर की अनेक शक्तियाँ निहित स्वार्थों और भेदों को उभारकर समाज में परस्पर अविश्वास, तंत्र के प्रति अनास्था और अराजकता पैदा करने हेतु नए-नए षड्यंत्र रच रही हैं। हमें इन सबके प्रति जागरूक रहते हुए उनके मंतव्यों को भी विफल करना होगा। यह अमृतकाल हमें भारत को वैश्विक नेतृत्व प्राप्त कराने के लिए सामूहिक उद्यम करने का अवसर प्रदान कर रहा है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा प्रबुद्ध वर्ग सहित सम्पूर्ण समाज का आह्वान करती है कि भारतीय चिंतन के प्रकाश में सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, लोकतांत्रिक, न्यायिक संस्थाओं सहित समाज वन के सभी क्षेत्रों में कालसुसंगत रचनाएँ विकसित करने के इस कार्य में संपूर्ण शक्ति से सहभागी बने, जिससे भारत विश्वमंच पर एक समर्थ, वैभवशाली और विश्वकल्याणकारी राष्ट्र के रूप में समुचित स्थान प्राप्त कर सके।

विद्या धाम जालंधर में आधार वर्ग

जालंधर। सर्वहितकारी शिक्षा समिति के मुख्यालय विद्या धाम में आधार वर्ग का आयोजन 14 से 28 मार्च तक किया गया। इस वर्ग में पंजाब के सभी 124 विद्या मंदिरों के लगभग 2000 में से चयनित 71 आचार्य शामिल रहे। आधार वर्ग में प्रतिदिन 8 सत्र आयोजित किए गए। इस दौरान प्रतिभागियों को शारीरिक, योग, संगीत, संस्कृत और नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा के विषय में अभ्यास कराया गया। ये पाचों विद्या भारती के आधारभूत विषय हैं जिनके आधार पर ही बालक का सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा। इसके अतिरिक्त अध्यापन की नवीनतम तकनीकों और 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020' के अनुसार भी प्रशिक्षण दिया गया। विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री विजय नड्डा ने कहा कि हम छात्रों को सिखाने का प्रयत्न न करें बल्कि विद्या मंदिरों में सीखने का वातावरण बनाना है, यही हम सबका मुख्य काम है। सीखने का वातावरण बनाने के लिए हमें छात्रों के मन में श्रद्धा का निर्माण करना है। श्रद्धा निर्माण की नहीं जाती, बल्कि मन में श्रद्धा की भावना स्वयं ही आती है। इस हेतु हमें अपने आचरण की ओर विशेष ध्यान देना होगा। छात्र हमारे उपदेश से नहीं बल्कि आचरण से अधिक सीखते हैं।

विद्या मंदिरों में सीखने का वातावरण बनाएं- श्री विजय नड्डा

मानक परिषद की अखिल भारतीय बैठक

कुरुक्षेत्र। विद्या भारती मानक परिषद की अखिल भारतीय टोली बैठक 15-16 मार्च को गीता निकेतन आवसीय विद्यालय परिसर कुरुक्षेत्र में आयोजित की गई।

विद्या भारती मानक परिषद स्कूल एसेसमेंट के कार्य में वर्ष 2015 से कार्यरत है। सत्र 2022-23 में विद्या भारती मानक परिषद ने 4 असेसर प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया। ये कार्यशालाएं मेरठ, झारखंड, गोरक्ष और कर्नाटक प्रान्त में आयोजित की गईं जिसमें 158 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण लिया। सत्र 2022-23 में झारखण्ड प्रान्त में 50, मेरठ प्रान्त में 28, कर्नाटक प्रान्त में 40 और गोरखपुर प्रांत में 52 असेसर ट्रेनिंग प्रोग्राम संपन्न हुए। इसके साथ ही असेसर उन्मुखीकरण कार्यशाला प्रांत एवं क्षेत्र के अनुसार आयोजित की गई। कुल 14 कार्यशालाओं में 450 असेसर ने भाग लिया। विद्या भारती मानक परिषद ने इस वर्ष 75 विद्यालयों का एसेसमेंट किया।

बैठक में श्री गोविंद चंद्र महंत संगठन मंत्री, श्री अवनीश भटनागर महामंत्री विशेष रूप से उपस्थित रहे।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान की चिंतन बैठक में कई विषयों पर मंथन

मथुरा में होगा अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव

कुरुक्षेत्र। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित चार दिवसीय चिंतन बैठक में विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी ने कहा कि हमें अपने सामने लक्ष्य बड़ा रखना चाहिए। लक्ष्य हम प्राप्त कर लेंगे, यह एक धारणा है, एक अवसर है, लेकिन लक्ष्य बनाकर उस दिशा की ओर हमेशा बढ़ते रहेंगे। जिस विषय पर हम चिंतन कर रहे हैं, उसके बारे में पूरी गहराई तक जाएं। जितनी गहराई तक जाएंगे, उतना ही हम विषय को पूरी तरह समझ पाने में समर्थ होंगे। हमारी शिक्षा कैसी होनी चाहिए, इसे हम अपने अंदर व्यक्ति स्वरूप में देखें, संगठन के कार्यकर्ता के रूप में देखें तो हमारे सामने एक दृष्टि आती है। वह दृष्टि हमारी आधारभूत इकाई तक जानी चाहिए। ऐसा भगवान श्रीकृष्ण जैसा विराट 'विजन' हमारे अंदर हो तो विद्यार्थी स्वयं आपके पास दौड़ा आएगा। जो हमने सीखा, जो ज्ञान प्राप्त किया, उसे दूसरे तक पहुंचाना हमारा शास्वत दायित्व है। इस प्रकार यह भारतीय ज्ञान प्रवाह निरन्तर आगे तक चलता आ रहा है।

ज्ञान को दूसरे तक पहुंचाना हमारा सारस्वत दायित्व : डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

सत्य और असत्य का निर्णय हम करें, ऐसी बुद्धि हमें चाहिए। हमें सत्य का निर्माण नहीं करना अपितु सत्य तो है, उसका दर्शन करना है। चिंतन बैठक सीखने की है। हमें विनम्र भाव से सीखने का प्रयास करना चाहिए।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह ने बताया कि चार दिवसीय बैठक में अनेक विषयों पर चिंतन हुआ। राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव मथुरा में आयोजित किया जाएगा। संस्कृति महोत्सव में नई विधाएं जोड़ी गई हैं। मूर्तिकला को महोत्सव में सम्मिलित करने पर विचार किया गया है। देशभर में कला एवं संस्कृति संरक्षण, योग, नैतिक मूल्य, विज्ञान विषयों पर कार्यशालाएं आयोजित करने पर भी विचार हुआ। कॉलेज विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति को समझने का सुअवसर संस्थान के माध्यम से मिलेगा। बैठक में राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, असम से प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विज्ञान मेला : नागालैंड

प्रधानाचार्य कार्यशाला, शिमला (हिमाचल)

भारत का शिक्षा दर्शन कहता है कि कोई किसी को सिखा नहीं सकता है जब तक कोई व्यक्ति खुद सिखने की कोशिश नहीं करता - श्री देशराज

शिमला। हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा सरस्वती विद्या मन्दिर हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला में पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विशेष रूप से विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के महामंत्री श्री देशराज , श्री गुलाब सिंह मेहता , श्री मोहन केस्टा , श्री दिलाराम चौहान , श्री ज्ञान आदि उपस्थित रहे।

इस कार्यशाला में भारत का ज्ञान एवं शैक्षिक विषयों उसका समावेश, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारम्भिक बाल्यकाल देखभाल एवं शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21st Century skills, विद्यालय में प्रधानाचार्य की भूमिका, व्यक्तित्व एवं पंचकोशिय विकास, Basic Knowledge of ICT, प्रधानाचार्य का विद्यालय के हितधारकों के साथ सामजस्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति नेतृत्त्व गुण, विद्यालय की वार्षिक योजना एवं बजट निर्माण, विद्या भारती के सात आवश्यक कार्यक्रम, How to implement NEP in classroom, राष्ट्रीय शिक्षा नीति Learning outcome, अभिनय शिक्षण पद्धति (पंचपदी), विद्या भारती के केन्द्रीय विषय एवं विद्यालयों में शैक्षिक स्तर को सुधरने हेतू विभिन्न प्रयोग इत्यादि विषयों पर विस्तार पूर्वक मंथन किया गया। कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश के 11 जिलों के वरिष्ठ माध्यमिक व उच्च विद्यालयों के 62 प्रधानाचार्य एवं मुख्यायापक ने भाग लिया।

उड़ीसा में पूर्व छात्र परिषद के द्वारा रक्तदान शिविर

प्रांतीय प्रधानाचार्य कार्य योजना एवं समीक्षा बैठक

आगरा। विद्या भारती ब्रज प्रदेश से सम्बद्ध शिशु शिक्षा समिति ने 01 मार्च से 03 मार्च 2023 तक सरस्वती शिशु मंदिर कमला नगर में प्रांतीय प्रधानाचार्य कार्य योजना एवं समीक्षा बैठक का आयोजन किया। बैठक में विशेष रूप से परीक्षा एवम् मूल्यांकन, वार्षिक निरीक्षण, वित्तीय एवम् कार्यालयीन प्रबन्धन, शैक्षिक उन्नयन, सेवा क्षेत्र की शिक्षा, सामाजिक सरोकार के आयाम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन, स्थानांतरण एवम् नियुक्तियां, प्रचार विभाग की उपादेयता और प्रधानाचार्य की भूमिका आदि पर विचार-विमर्श किया गया।

विद्या भारती उत्तराखंड के तिब्बत और नेपाल बॉर्डर पर स्थित विद्यलयो के प्रधनाचर्या की बैठक में मा. गोविंद महंत - अखिल भारतीय संगठन मंत्री और श्री डोमेश्वर क्षेत्रीय संगठन मंत्री का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ ...

सेवा बस्ती में किया सौर ऊर्जा लाइट का वितरण

जोधपुर। प्रबन्ध समिति आदर्श विद्या मन्दिर जोधपुर एवं कैवल्य सेवा संस्थान ने पाल बाला स्थित सेवा बस्ती में सौर ऊर्जा लाइट का वितरण किया। इस अवसर पर विद्या भारती जोधपुर प्रान्त के सचिव श्री महेन्द्र कुमार दवे ने बताया कि अंधकार से उजाले की ओर जाने वाले नववर्ष पर्व के उपलक्ष्य में सौर ऊर्जा लाइट का वितरण किया गया। मुख्य अतिथि कैवल्य सेवा संस्थान की प्रदेशाध्यक्ष निशा राठौड़ ने कहा कि हमें हमारी संस्कृति से जुड़े रहकर देशप्रेम की भावना संजोनी चाहिए। माता-बहिनों से आग्रह किया कि अपने परिवारों को जोड़कर रखें। हमारे संयुक्त परिवारों की रक्षा करना एवं सबका कल्याण हो, इस भाव को मन में रखना चाहिए।

महानगर संस्कार केन्द्र प्रमुख श्री रामकिशोर अग्निहोत्री ने सौर ऊर्जा लाइट का प्रयोग किस प्रकार किया जाए, इसकी जानकारी दी। समिति के कोषाध्यक्ष श्री अशोक गहलोत ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूर्व छात्र होली मिलन

अपने विद्यालय से जुड़ें पूर्व छात्र- श्री रवि कुमार

दिल्ली। रंगोत्सव के पावन अवसर पर 4-5 मार्च 2023 को पूर्व छात्र परिषद दिल्ली प्रान्त की योजना से होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इनमें दो विभाग स्तरीय कार्यक्रम उत्तरी विभाग का पश्चिम विहार में और पश्चिम विभाग का लीलावन्ती विद्यालय, हरिनगर में हुआ। तीन विद्यालय स्तरीय कार्यक्रम नेहरू नगर, वसंत विहार व महरौली में सम्पन्न हुए। तीनों स्थानों पर दिल्ली प्रान्त के संगठन मंत्री श्री रवि कुमार का सानिध्य रहा। उन्होंने कहा कि पूर्व छात्र विद्या भारती की पूंजी हैं। पूर्व छात्रों में संस्कार बने रहें, उनके परिवार में अगली पीढ़ी में संस्कार जाएं, वे जो कार्य कर रहे हैं अच्छे से करें, सामाजिक रूप से सक्रिय हों, अपने विद्यालय से जुड़ें और अगली पीढ़ी के लिए क्या कर सकते हैं, इसका विचार करें, ऐसी अपेक्षा विद्या भारती पूर्व छात्रों से करती है। होली मिलन कार्यक्रमों में 13 विद्यालयों से 607 पूर्व छात्रों एवं 106 आचार्य-प्रबंध समिति सदस्यों की सहभागिता रही।

श्री-सरस्वती विद्यापीठम - तेलंगाना सेवा विभाग ओर से संस्कार केंद्र खेल-कूद

हैदराबाद । संत सेवालाल जयंती समापन समारोह के अवसर पर श्री सरस्वती नगर संकुलम, भाग्य नगर विभाग में बालक एवं बालिकाओं के लिए संस्कार केन्द्र खेल-कूद का आयोजन किया गया। समापन कार्यक्रम में श्री सरस्वती विद्या पीठ तेलंगाना के कार्यक्रम संगठन मंत्री श्री पथकमुरी श्रीनिवास राव और सचिव श्री मुक्कला सीतारामुलु ने भाग लिया।

संस्कार कहाँ मिलते है...?

विद्या भारती के पूर्व छात्र श्री रवीज ठाकुर (फिल्म इंडस्ट्री का शाइनिंग चहेरा) सरस्वती विद्या मंदिर समोली में आएं।

राष्ट्रीय खेलकूद विभाग की समीक्षा बैठक

नैनीताल। अखिल भारतीय खेलकूद विभाग की समीक्षा बैठक 21-22 मार्च को पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती सीनियर सेकेंडरी स्कूल नैनीताल में संपन्न हुई। बैठक में श्री श्रीराम आरावकर , श्री राजेंद्र सिंह , श्री हेम चंद्र , राष्ट्रीय खेल संयोजक श्री मुखतेज सिंह बदेशा और खेल विभाग के क्षेत्रीय प्रमुख एवं सदस्य उपस्थित रहे। इस दौरान विगत बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन किया गया और 2022-23 में संपन्न अखिल भारतीय खेल प्रतियोगिताओं का वृत्त प्रस्तुत किया गया।

प्रमुख निर्णय

- 10 मिनट की व्यायाम श्रृंखला को आग्रहपूर्वक सभी विद्यालयों में लागू कराना।
- सभी विद्यालयों में बैटरी टेस्ट वर्ष में दो बार अनिवार्य कर रिकॉर्ड रखना तथा विद्यालय छोड़ते समय छात्रों को उपलब्ध कराना।
- प्रांतीय / क्षेत्र स्तर पर महिला निर्णायकों के प्रशिक्षण वर्ग अनिवार्यतः लगाकर उनकी संख्या बढ़ाना।
- अखिल भारतीय प्रतियोगिता में सहभागिता करने वाले खिलाड़ियों को संचलन का अभ्यास कराना।
- प्रांत-क्षेत्र में खेलो इंडिया की एकेडमी बनाए जाने लायक विद्यालयों की सूची बनाना तथा उनका प्रत्यक्ष निरीक्षण कर उनके नाम केंद्रीय कार्यालय को भेजना।
- ऐसे छात्र जो व्यक्तिगत खेलों में बहुत अच्छा कर रहे हैं, उनकी पहचान साईं के अधिकारी बुलाकर करना ताकि ठीक से प्रशिक्षण कराया जा सके।
- इस वर्ष ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण वर्ग बास्केटबॉल (मध्य क्षेत्र), कबड्डी (पश्चिम उत्तर प्रदेश), खो-खो (राजस्थान क्षेत्र), जूडो (मध्य क्षेत्र) और कुश्ती (पूर्वी उत्तर प्रदेश) में आयोजित किए जाएंगे।
- अगर सत्र 2022 और 23 की स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है तो विद्या भारती के अंडर-19 के खिलाड़ियों को सहभागिता हेतु भेजा जाएगा। अंडर-17 के छात्र केवल एथलेटिक्स में भाग लेंगे।
- फिट इंडिया स्कूल में जिन विद्यालयों का पंयन होना अभी शेष है अति शीघ्र उनका पंयन कराना तय किया गया।
- विद्या भारती के सभी विद्यालयों के खेल या शारीरिक के आचार्य-दीदियों का एक ऑनलाइन प्रशिक्षण शीघ्र फिट इंडिया के प्रशिक्षकों द्वारा कराया जाएगा।
- परंपरागत खेलों का अभिलेख तैयार करने के लिए बैठक आयोजित की जाएगी।
- आगामी सत्र में 35 खेलों की राष्ट्रीय प्रतियोगिता कराने का निर्णय लिया गया तथा उसके क्षेत्र तय किए गए।
- 2024-25 में विद्या भारती के खिलाड़ियों के लिए नया ट्रैक सूट डिजाइन किया जाएगा।
- विद्या भारती के सभी खिलाड़ियों को शुरू से ही सभी वर्गों में अपने अभिलेखों के साथ जन्म प्रमाण-पत्र लगाना अनिवार्य किया गया।

व्यक्तित्व विकास शिविर

विद्या भारती झारखंड एवं सूर्या फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में व्यक्तित्व विकास शिविर

शैक्षिक प्रयोग

शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक अभिरुचि का विकास कर रही गणित प्रयोगशाला

दिल्ली। शिशु भारती विद्यालय नं. 2, गाँधी नगर, दिल्ली में **गणित प्रयोगशाला** की कार्यशाला ग्रीष्मावकाश में प्रारंभ किया गया था। इसमें कक्षा तीसरी से आठवीं तक के छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया। गणित प्रयोगशाला में छात्रों द्वारा self-explanatory दीवारों का निर्माण किया गया और चारों दीवारें वर्गों के अनुसार विभाजित की गयीं। प्राथमिक विंग की अवधारणा को दर्शाने वाली पहली दीवार, उच्च प्राथमिक विंग की अवधारणा को दर्शाती दूसरी दीवार, बहु-शास्त्रीय अभिगम को प्रदर्शित करती तीसरी दीवार और चौथी दीवार पर वैदिक गणित, भारतीय गणितज्ञों के सूत्र दर्शाए गए। इसमें अधिकतम वस्तुएं गणितीय आकृतियों से सुसज्जित हैं, जैसे फर्नीचर के लिए घनाभ आकृति का प्रयोग किया गया है। कुछ तैयार मॉडल खरीदे भी गए जैसे पूर्णांक की अवधारणा, संख्या रेखा, ज्यामितीय अवधारणा, रंगीन मोती, अबेकस आदि। इन प्रयोगशालाओं में विभिन्न प्रकार के प्रयोग करके बालक न केवल करके सीखते हैं अपितु व्यावहारिक एवं वनोपयोगी ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। प्रयोगशाला में कार्य करते हुए शिक्षार्थियों में दायित्व बोध का विकास होता है और शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।

गणित प्रयोगशाला शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में सबसे अधिक प्रभावी और व्यावहारिक साधन है।

गणित प्रयोगशाला में सत्र 2022-23 में विद्यार्थियों ने तीन मॉडल निर्मित किए-

1) पाइथागोरस प्रमेय
2) प्रिज्म और पिरामिड में अंतर
3) METRIC MEASURES

3-डी सौरमंडल बना सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला का मुख्य आकर्षण

विद्यालय में सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला के निर्माण में कक्षा सातवीं से दसवीं तक एवं पूर्व छात्रों को सम्मिलित किया गया। इस प्रयोगशाला की चार दीवारों को वर्गों के अनुसार विभाजित किया गया। ये दीवारें सामाजिक विज्ञान के विषयों जैसे भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्र एवं अर्थशास्त्र को समर्पित हैं। इन दीवारों को विशेष नाम दिया गया है और ये MULTI-DISCIPLINARY APPROACH पर आधारित हैं। सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला का मुख्य आकर्षण 3-डी सौरमंडल है। प्रयोगशाला में स्मार्ट टी.वी का प्रयोग किया गया है जिसके माध्यम से समय-समय पर विषय से संबंधित वीडियो आदि दिखाए जाते हैं। छात्रों को स्वयं को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जाता है। यहां कार्य करते हुए छात्रों में दायित्व बोध का विकास होता है। प्रयोगशाला में संस्कार केंद्र के छात्रों को भी समय-समय पर लाया जाता है। सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला छात्रों को रचनात्मक रूप से सोचने, वन मूल्यों को विकसित करने और उनकी रुचियों का पता लगाने के लिए अवसर प्रदान करती है। सत्र 2022-23 में विद्यार्थियों ने 5 मॉडल्स का निर्माण किया-

1.Volcano (Working Model)
2.Soil Profile
3.Monestry
4.Layers of earth
5.Working of river and Sea waves

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र - क्षेत्रीय व प्रांतीय कार्यालय कर्मी कार्यशाला, कुरुक्षेत्र

विद्या भारती E-पाठशाला एप्प

भोपाल। विद्या भारती E-पाठशाला की अखिल भारतीय टोली बैठक 21-22 फरवरी को सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान भोपाल में आयोजित की गई। इसमें 7 क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व हुआ। इस दौरान विद्या भारती E- पाठशाला का एप्प प्ले स्टोर पर उपलब्ध कराया गया। गूगल प्ले स्टोर से इसे डाउनलोड किया जा सकता है। एप्प में लाइव कक्षाएं प्रारम्भ होंगी और इसमें स्टडी मैटीरियल भी उपलब्ध है। इसके साथ ही कक्षा अनुसार शिक्षण सामग्री भी है। समय-समय पर शिक्षण सामग्री, लाइव क्लास, ऑनलाइन टेस्ट, क्लास टेस्ट, पोल एवं एक्सपर्ट वीडियो प्राप्त होंगी। विद्या भारती E-पाठशाला के माध्यम से इस वर्ष कोडिंग क्लास, ICT प्रशिक्षण, कंप्यूटर का प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

बालिका आदर्श विद्या मंदिर, शास्त्री नगर, जोधपुर की पूर्व छात्रा सिस्टर ऑफ़ सोल्जर्स कर्नल(मानद) पार्वती का नाम "हार्वर्ड वर्ल्ड रिकाइर्स व इण्डिया बुक ऑफ़ रिकाइर्स" में दर्ज

विद्या भारती की उपलब्धियां

सरस्वती विद्या मंदिर रौड़ा सेक्टर, बिलासपुर के पूर्व छात्र दिव्यांश भारद्वाज भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बने।

श्री चिरंलाल अंबिकाप्रसाद ओझा प्राथमिक आदर्श विद्या मंदिर, चूरू की पूर्व छात्रा अनुप्रिया नाथावत को राजस्थान बोर्ड परीक्षा (कक्षा 12) में टॉप करने पर राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार योजना के तहत एक प्रशस्ति पत्र के साथ ₹ 100,000 का नकद पुरस्कार दिया गया।

एसएमबी गीता स्कूल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्र श्री रमनीश गीर (1981 बैच), संयुक्त निदेशक - सीबीआई को राष्ट्रपति का "पुलिस पदक" मिला। इससे पहले 2014 में उन्हें सर्वश्रेष्ठ जांच अधिकारी के रूप में मेधावी पुलिस सेवा के लिए स्वतंत्रता दिवस पदक और 2006 के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था।

सरस्वती शिशु मंदिर डोंगरगढ़ के पूर्व छात्र ऋषिकेश सिन्हा ने ऑल इंडिया GATE परीक्षा 2023 रेंक में 1123 हासिल किया।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 110065

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net
www.vidyabharatisamvad.com

ई-मेल : vbabss@yahoo.com
vbsamvad@gmail.com
फोन: 91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,